बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2019 -2020 /2021
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
कोर्स - C 2/यूनिट - 4 (d)
<u>प्रकरण - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं विद्यालयी वातावरण</u>
व्याख्यान सं. - 13
Continued from previous class

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

<u>विद्यालयी वातावरण के आयाम</u>

किसी भी विद्यालय के वातावरण में भौतिक आयाम की अपेक्षा मानवीय आयाम का प्रभाव ज्यादा होता है। भौतिक आयाम की कमी से तो समझौता किया जा सकता है किन्तु मानवीय आयाम से समझौता करने पर विद्यालय के अधिगम-वातावरण पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मानवीय आयामों में प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक का व्यवहार व इनकी अन्तःक्रिया ही विद्यालय वातावरण करती है। अतः नीचे प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक के व्यवहार की चर्चा की जा रही है :-

1. **<u>प्राधायनाध्यापक का व्यवहार :-</u> हॉपिन एवं क्राफ्ट** ने प्रधानचार्य के चार व्यवहार बताए हैं जो विद्यालय के वातावरण का निर्माण करते हैं :-

    a. **अलगाव/विलगाव** (Aloofness) **:** इस स्थिति में प्रधानाचार्य किसी भी स्टाफ से किसी भी प्रकार का भावनात्मक रिश्ता नहीं रखता है। वह स्टाफ से केवल औपचारिकतों को निभाता है। वह नीतियों व नियमों का अनुसरण करने वाला बनता है। ऐसी स्थिति में अध्यापक भी उससे दूर रहते हैं। चूँकि प्रधानाध्यापक ही विद्यालय का नेता होता है अध्यापक भी उसी का अनुसरण करते हैं। वे भी छात्रों से आत्मीयता नहीं दर्शाते, वे भी केवल नियमों की बात करते हैं।

    b. **दबाव या गति देना** (Thrust) **:-** इस स्थिति में प्रधानाचार्य विद्यालय को गति प्रदान करने वाला होता है। वह स्वयं के द्वारा कए गए कार्यों का उदाहरण उसका व्यवहार अध्यापकों द्वारा सकारात्मक व प्रशंसात्मक रूप में देखा जगाता है। वे भी उससे प्रेरित हो कार्य करते हैं। इस प्रकार विद्यालय का वातावरण भी स्वस्थ एवं उन्नति करने वाला होता है।

    c. **उत्पादकता प्रिय** (Emphasis on Production)**:-** इस स्थिति में प्रधानाध्यापक विद्यालय के स्टाफों का सूक्ष्म निरीक्षण करता है। वह केवल निर्देशक मात्र होता है। उसके द्वारा कही बातें अंतिम होती हैं। उसका सम्प्रेषण एकतरफ़ा होता है। वह अपने

अधीनस्थ अध्यापकों की बातें नहीं सुनता है। उसका उद्देश्य तो उत्पादकता बढ़ाना ही होता है किन्तु उसके व्यवहार के कारण संस्थान का उत्पादन में स्वतः कमी आ जाती है।

d. **विचारपूर्ण/लिहाज** (Considerate) **:-** ऐसी स्थिति में प्रधानाध्यापक अध्यापकों का मानवीय रूप से अधिक ध्यान रखते हैं। अध्यापक भी प्रत्येक स्थिति में प्रधानध्यपक के साथ होते हैं। परिणामस्वरूप इस स्थिति में विकास सर्वोत्तम होता है।

2. **अध्यापक का व्यवहार :-** अध्यापक के व्यवहार के भी चार प्रकार बताए गए हैं जो निम्न प्रकार हैं :-

a. **मुक्ति/निर्मुक्तता** (Disengagement):- इस स्थिति में अध्यापक कार्य की परिस्थिति में स्वयं को अलग रखता है। वह कुछ कार्यों में प्रधानचार्य से अलग रहता है। यह संभव है की किसी कारणवश उसे पूर्व सूचना न मिल सकी हो। ऐसे में विद्यालय की प्रगति शिथिल हो जाती है, विकास बाधित हो जाता है।

b. **बाधा/रुकावट** (Hindrance) :- ऐसी स्थिति तब उत्पन्न होती है जब प्रधानाध्यापक द्वारा अध्यापक पर अनावश्यक कार्यों का दायित्व सौंपा जाता है। उसे ऐसा महसूस होता है की उसे व्यर्थ के दायित्व देकर परेशान किया जा रहा है। ऐसे में विद्यालय का विकास बाधित होता है।

c. **सद्भाव/उत्साह** (Spirit) :- ऐसी स्थिति में अध्यापक में उत्साह बना रहता है। उसे महसूस होता है की उसके सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर दी गयी है। अतः वह भी विद्यालय के कार्यों का निष्पादन उत्साहपूर्वक करता है। ऐसे में विद्यालय का विकास होता रहता है तथा विद्यालय वातावरण स्वच्छ बना रहता है।

d. **आत्मीयता/लगाव** (Intimacy) :-इसमें शिक्षकों की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। विद्यालय में सौहार्दपूर्ण वातावरण बना रहता है। किसी शिक्षक की अनुपस्थिति या किसी अन्य कारण से कार्य के अपूर्ण रहने की दशा में उसे शिक्षकों द्वारा पूर्ण किया जाता है। अतः विद्यालय का विकास निर्बाध गति से होता रहता है।

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में उन्नयन हेतु सुझाव

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने इसका सर्वव्यापीकरण एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। सर्वशिक्षा अभियान की तर्ज पर राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा की अनुप्रयोगात्मक उपादेयता से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसकी गुणवत्ता में सुधर हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित किये जा सकते हैं :-

1. शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर बालक एवं बालिकाएं महत्वपूर्ण हैं तथा उनका शैक्षणिक विकास उनकी अभिरुचि व योग्यता के अनुरूप ही किया जाना चाहिए।

2. प्राथमिक स्तर के शुरुआती दौर में ही विषय वस्तु को महत्व दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम हस्तांतरण में निर्देशात्मक-अनुदेशात्मक शैली के स्थान पर सृजनात्मक शैली के द्वारा होना चाहिए ताकि बच्चे स्वयं ज्ञान का सृजन कर सकें।

3. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्मृति स्तर (रटने पर ज़ोर) के शिक्षण से अवबोध के स्तर की ओर उन्नमुख किया जाना चाहिए।

4. शिक्षण पद्धति को सिर्फ "चॉक एवं टॉक (Chalk & Talk)" से सूचना व संचार तकनीक (इ-एजुकेशन) की तरफ प्रतिमान परिवर्तन किया जाए।

5. ट्युशन-कोचिंग को पूर्णतः प्रतिबंधित कर शिक्षक व छात्रों में शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व संस्कृति विकसित की जाए।

6. प्राथमिक शिक्षा की भांति ही माध्यमिक शिक्षा के लिए निश्चित धन का आवंटन किया जाए।
7. भाषा शिक्षण में परस्पर संवाद को महत्व दिया जाए ताकि शिक्षण के प्रारंभिक सोपान से ही पढ़ने व लिखने का कौशल विकसित हो सके।